Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

पूर्वी मालवा की शैव मूर्तिकला

Dr. VINITKUMAR R. PATEL
GOVERNMENT SCHOOL,TA- DHOLKA
(M.A., MPHIL.,B.ED., M.ED., PH.D.)
Email : bkvinitkumar@gmail.com

प्रस्तावना

भारत की सभी कलाओं में धार्मिक परंपरा का एक अलग महत्व है। जिस का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसलिए माना जाता है कि धार्मिक कला के साथ-साथ मूर्तिकला की भी परिकल्पना की गई है। जिसके दो मूल आधार है, धार्मिक एवं सामाजिक. मनुष्यने सामाजिक दृष्टि से मन बहलाने के लिए खिलौनों का रूप दिया। फिर कालक्रम अनुसार धर्मो का प्रागट्य हुआ, तब धर्म ने उस प्रतीक को समाज की प्रगति का माध्यम बना डाला। मूर्ति में प्रेम आदर श्रध्धा जैसे भाव प्रकट होने लगे। जिसके कारण उसका अधिक महत्व बढ़ता गया। हर मूर्ति में सौंदर्य का प्राकट्य हुआ। मूर्ति के कारण एकता बढी और मूर्तियों को सुंदर बनाते गए। इस वजह से हर एक मूर्तियों में मूर्तिकला आकर बसी। इस वजह से मूर्तियों में प्रेम श्रध्धा आत्मीयता जैसे भाव अवतरित होने लगे। यूतो मूर्ति सृजनता के संबंध में भिन्न-भिन्न मान्यताएं हो सकती हैं, किंतु सामान्यतः यही माना जाता है, कि सर्वप्रथम चिंताकुल मानव के मन में जब भय का भाव स्थाई हुआ। तब सुरक्षा के लिए धार्मिक विश्वास को ही मूर्ति का प्रतीक में सृजान और फिर क्रमिक दिव्य, भव्य रूप में परीकल्पित कर दिया गया।

❖ शैव मूर्तिकला

पूर्वी मालवा में शैव धर्म का प्रभाव अन्य क्षेत्रों से भी प्राचीन रहा है। इस दृष्टि से रायसेन और भीमबेटका शैलाश्रय महत्वपूर्ण है। यहां के प्रागैतिहासिक चित्रांकन से सर्व धर्म का प्राचीनतम इतिहास का अनुमान लगाया जाता ह। लेकिन मूर्ति कला की दृष्टि से शिव धर्म की मौर्यकालीन मूर्तियां प्रतीत होती हैं। पूर्वी मालवा के आहत मुद्राओं में आकृति का अंकन है। मुद्राओं पर अंकित स्थानक पर आकृति जिसके दाहिने हाथ में त्रिशूल या दंडक या भाला तथा बाएं हाथ में कमंडल प्रतीत है। उस पर से मालूम पड़ता है, कि यह शिव मूर्तियां है। कुछ मुद्राएं तृषा आकृति से अंकित है। इसकी सिर आकृति को कुछ विद्वानों ने महाकाल की है, वैसा बोला है। लेकिन ब्रह्मा,विष्णु ,महेश की त्रिमुखी आकृति अधिक विचारणीय प्रतीत होती हैं। इस प्रकार की अनेक मुद्राएं वर्तमान में मौजूद है। और उसको संग्रहालय में रखा हुआ है।

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

❖ **शैव की लिंग प्रतिमाएं**

जीस प्रांत से शिवलिंग तथा नाग की प्रतिमाएं अधिक प्राप्त हुई है। विदिशा में मौजूद शिव की पूजा प्रतीकात्मक लिंग रूप में विध्यमान थी। जिसकी पुष्टि वहां से प्राप्त होती मूर्तियां से होती है। जो परमार कालीन अन्य प्रतिकात्मक प्रतिमाओं के साथ दुष्टव्य है। क्षणिक लिंग और मृण्मय लिंग तो आज भी इस क्षेत्र की धार्मिक पूजा के अनेक अवसरों पर देखे जा सकते हैं । मालवा के उज्जैनी नगर में अचल शिवलिंग महाकाल का आज भी अस्तित्व दिखाई पड़ता है। इसमें स्वयंभू लिंग की प्रमुखता है। इनका जिणॉधार नहीं किया जाता, इसे अंत काल तक रहने वाला कहा गया है। इस लिंग का स्थान परिवर्तन दोसावह था। किसी कारण वश कलंक को हटाने पर अनिष्ट की संभावना की जाती थी। यहां तक कि उस राज्य के राजा का विनाश उसी कारण हुआ वैसा माना जाता है।

❖ **साधारण शिवलिंग**

साधारण शिवलिंग सामान्य रूप में होते हैं।इनका का कोई पहले से तय किया हुआ आकार प्रकार नहीं होता। यह अनेक भिन्न-भिन्न संख्या में पाए जाते हैं। लेकिन इनकी कोई अलग कला की विशेषता ना होने के कारण समय का निर्धारण कठिन है। और मंदिरों के समय के प्रकाश में इनका कालमापन का प्रयास भी किया जाता हे।

❖ **त्रेराशिक शिवलिंग**

त्रेराशिक शिवलिंग अधिक संख्या में पाए गए हैं। जो अधिकांश परमार कालीन मंदिरों में प्रतिस्थापित हैं। उदयपुर मंदिर, नीलकंठेश्वर महादेव तथा विदिशा भोजपुर इत्यादि स्थानों में इस प्रकार के शिवलिंग देखे जा सकते हैं। इस प्रकार के शिवलिंग में 3 भाग होते हैं। ऊपर का भोग पीठ, बीच का भद्र पीठ होता है। यह लिंग प्रतिमाएं सर्वधर्म समन्वय के प्रतीक भी कही जा सकती हैं।

❖ **एक मुखी लिंग**

एक मुखी लिंग विदिशा के निकट उदयगिरि की गुफाओं से हैं। जिसमें सेव मूर्ति कला का विकास क्रमशः हुआ है। बेसनगर से 2 शिवलिंग प्राप्त हुए हैं। जो एक मुखी हैं। इस शिवलिंग की आकृति सुंदर और भारी हैं। तीसरे नेत्र का अभाव है। कानों में बड़े कुंडल है। उदयगिरी की गुफाएं तो गुप्तकालीन है। यहां गुफा नंबर 4 में स्थापित शिवलिंग पुराना प्रतीत होता है। लिंग का मुख गोलाकार है। आकर्षक केस हैं। मस्तक के केस गणन में बांधे गए हैं। दोनों कंधों पर केस दिखाई देते हैं। टूटी हुई नाक है। गले में हार हैं। मुख पर उत्कीर्ण गंभीर प्रशांत भाव प्रभावशाली हैं।

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

❖ **चतुर्मुखी शिवलिंग**

चतुर्मुखी शिवलिंग यहां की गुफा क्रमांक 19 में आज भी गुप्तकालीन शिवलिंग देखा जा सकता है। ग्यारसपुर से 4 फुट ऊंचा एक चतुर्मुखी शिवलिंग है, इसमे तीन मुख्य स्पष्ट है। जिसमें, ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव स्पष्ट हैं। जो कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। परमार साम्राज्य में सर्वाधिक आराधना मानवीय रूप में भगवान शिव की होती थी। संभवत: हो शिव भगवान ही परमार नरेश का रक्षक देवता था।

❖ **उमा महेश्वर**

परमार कालीन परमार रायसेन जिले के आशापुरी क्षेत्र से भी प्राप्त हुई प्रतिमा परिसर में शिव मुद्रा में बैठे देवी पार्वती का आलिंगन कर रहे हैं। चतुर्भुजी शिव का एक अभय मुद्रा तथा अन्य में त्रिशूल सर्प हैं। उमा का एक हाथ शिव के कंद पर तथा दूसरा हाथ दर्पण युक्त हैं। प्रतिमा में देव नक्शे लेकर सिर तक अलंकृत और सुसज्जित है। गणेश की भी छोटी आकृति तथा कार्तिकेय का शिल्पांगन भी है। नंदी और सिंह भी हैं। इस संग्रहालय में प्रदर्शित १०वी सदी ई. की एक रावण अनुग्रह मूर्ति बहुत सुंदर है। इस जगह में उमा महेश्वर वार्तालाप करते दिखाई दिए हैं।

❖ **नृत्य प्रतिमाएं**

शंकर के नृत्य में सृष्टि की उत्पत्ति रक्षा एवं विनाश समाया है। जिसमें तीसरी आंख खोलकर तांडव करते दिखाते हैं। नटराज की प्रतिमाओं में ताल का विशेष ध्यान रखा गया है। चतुर्भुजी एवं अष्टभुजी मूर्तियों में विविध वादियों से संगीत बजाते हुए शिव को दिखाया है। मालवा की पूर्वी परिक्षेत्र में शिव की नृत्य प्रतिमाओं की प्राचीनता तथा ढली हुई ताम्र मुद्राओं पर नृत्य करते हुए पुरुष की आकृति का अंकन से हनुमान लगा सकते हैं। उज्जैनी के महाकाल मंदिर में शिव के सानिध्य नित्य का उल्लेख कालिदास के मेघदूत में मिलता है। इंदरगढ़ का शिलालेख शिव के नटराज स्वरूप की वंदना करता है। उदयपुर नामक ग्राम में नटराज शिव की एक परमार कालीन षडभुजी प्रतिमा है। यह प्रतिमा चट्टान काटकर बनाई है। महादेव के गले में सर्प जटा मुकुट में अर्धचंद्र का अंकन है। दाएं हाथों में तलवार डमरु त्रिशूल हैं। बाई और के ऊपरी हाथ में कपाल मुद्रा में हैं। शिव की नटराज प्रतिमा तांडव नृत्य मुद्रा में उत्तीर्ण की गई है। पैरों के नीचे आपस मार पुरुष आकृति हैं। यहीं पर परमार कालीन बटेश्वर शिव के हाथों में त्रिशूल सर्प धनुष दिखाया है। देव के पास 2 गण डमरु बजाते हुए प्रदर्शित हैं। उदयपुर के नीलकंठेश्वर महादेव के मंदिर में शिव नटराज की प्रतिमा अधिक कलात्मक हैं। देव के दोनों पशुओं में नृत्यरत काली या योगिनी तथा उड़ती हुई अप्सराओं की

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

प्रतिमाओं का अंकन अत्यंत सुंदर है। और इसी प्रकार की एक अन्य चतुर्भुजी नटराज प्रतिमा विदिशा के विजया मंदिर में हैं। इसमें शिव लास्य नृत्य करते हुए प्रदर्शित हैं। देव का दाहिना हाथ दाहिने उठे हुए पैर को पकड़े हुए हैं। ऊपर का दाहिना हाथ त्रिशूल पकड़े दिखाया है। दो खड़े स्तंभों में मध्य शिव त्रिभंगी नृत्य मुद्रा में है। बाया एक हाथ नृत्य मुद्रा में हैं।

❖ **भैरव प्रतिमाएं**

शैव धर्म के कुछ संप्रदाय जैसी के कापालिक भैरव का रूप माना गया है । जो अत्यंत डरावना हैं। शिव हमेशा शमशान की भूमि पर निवास करते हैं। मस्तक पर बिखरे हुए बाल रहते हैं। वे नग्न अवस्था में घूमते रहते हैं। कभी मुस्कुराते हैं , कभी रोते हैं। शरीर पर चिता की भस्म लगाई हुई रहती हैं। हड्डियों के आभूषणों से अलंकृत हैं

विष्णु धर्म उत्तर पुराण के अनुसार भैरव का लंबा उदर, पीले वरुण का और गोल गोल नेत्र तथा बड़ी आंखें हैं। उनका मुख भीषण तथा नासा पुर बड़ा है। गले में मुंडमाला रहती हैं। पूरे शरीर पर सर्पों का अलंकार है। भैरव अनेक रूप धारी होते हैं। और भैरव के कई प्रकार है। जैसे कि सामान्य भैरव बटुक भैरव, चतुर्थी भैरव। भैरव के स्वरूप का वर्णन पुराने प्राचीन काल में दिखाया है। लेकिन मूर्ति कला की दृष्टि से पूर्वी मालवा परिक्षेत्र में दसवीं शताब्दी से प्रतिमाएं बनी हुई हैं। इस प्रकार की एक कलात्मक प्रतिमा ग्यारसपुर से प्राप्त हुई हैं। जो वर्तमान में जिला पुरातत्व संग्रहालय विदिशा में हैं।

❖ **उपसंहार**

इस तरह पूर्वी मालवा में शिव की मूर्तिकला का विशेष वर्णन किया गया है। जो शुरुआत से शिव की भक्ति की महिमा दिखाता है। हर एक मूर्तियों की अपनी अपनी कहानियां हैं जो हर एक मूर्तियों का इतिहास वर्णन करता है। जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे मनुष्य संस्कृति समाज रीति रिवाज में परिवर्तन आते गए। उस अनुसार मूर्तिकला में परिवर्तन आते गए। और भिन्न-भिन्न राजाओ ने अपने तरीके से मंदिर निर्माण किए जिसमें ब्राह्मण प्रतिमाएं लिंग प्रतिमाएं,त्रेराशिक शिवलिंग , एक मुखी लिंग चतुर्मुखी शिवलिंग जैसे भिन्न-भिन्न शिवलिंग और मंदिरों की रचनाएं हुई है। जो अपने में आगरी विशेषताएं संजोकर बैठा है।

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

❖ **संदर्भ सूची:**

1. प्राचीन भारतीय कला वस्तु कला एवं मूर्तिकला प्रोस्टेट, पृष्ठ १०८.
2. एलिमेंट्स ऑफ हिंदू आइकोनोग्राफी टूरिस्ट सत्ता, पृष्ठ ९७.
3. कॉपर इनस्क्रिप्शंस इंडी कैरम ,भाग ३, पृष्ठ ३५.
4. मध्यकालीन इतिहास ,भाग १ ,पृष्ठ ५०६.
5. प्राचीन मैं शैव मत का विकास ,पृष्ठ ३९.
6. प्रतिमा विज्ञान, पृष्ठ १२५.
7. त्रिपुरी की मूर्तिकला, पृष्ठ ३६.
8. पूर्वी मालवा के मूर्तिशिल्प, पृष्ठ ११२.
9. परमार परमार कालीन सभ्यता एवं संस्कृति, पृष्ठ १२३.
10. प्राचीन मालवा में शैव धर्म , पृष्ठ १०७.
11. मध्यभारत की प्रतिहार कालीन कला एवं स्थापत्य, पृष्ठ ९५.